महाकवि कबीर दास

मृग कि नाभि कस्तूरी ,वन –वन फिरत माही।

येसे घटि राम है, दुनिया देखें नाहीं ।।

मूर्ख मानव जो अज्ञानी है ,जिसके पास ज्ञान नहीं है वह अज्ञानता वश, ज्ञान के अभाव में पशु मृग की तरह, ईश्वरध्अल्लाह ''साईं राम ''को मंदिर और मस्जिद में ढूंढता। वे तो चर –अचर, सजीव –निर्जीव सभी जीवों के (आत्मा) हार्ट में बसते हैं।

हिंदुओं और मुसलमानो में अज्ञानता वस उनके अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया है।

हिंदुओं के प्रति–

आसन मारी मंदिर में बैठे, ' राम ' नाम छाड़ी पूजन लागे पथरा।

मुसलमानो के प्रति–

कांकर पांथर जोड़ी के, मस्जिद लियो चुनाय ।

ता चढ़ी मूला बांग दे ,क्या बहरा हुआ खुदाय।।

जिस प्रकार तुम घर से बाहर हो, मां तुम्हारे पास नहीं है, पर मां की चेहरा को याद करो, तुम्हारे आंखों के सामने दर्पण की भांति उसकी चेहरा आ जाती है। ठीक उसी प्रकार एक जहां ३

'' महाकवि कबीर दास''

मृग कि नाभि कस्तूरी ,वन –वन फिरत माही।

येसे घटि राम है, दुनिया देखें नाहीं ।।

मूर्ख मानव जो अज्ञानी है ,जिसके पास ज्ञान नहीं है वह अज्ञानता वश, ज्ञान के अभाव में पशु मृग की तरह, ईश्वरध्अल्लाह ''साईं राम ''को मंदिर और मस्जिद में ढूंढता। वे तो चर –अचर, सजीव –निर्जीव सभी जीवों के (आत्मा) हार्ट में बसते हैं।

हिंदुओं और मुसलमानो में अज्ञानता वस उनके अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया है।

हिंदुओं के प्रति–

आसन मारी मंदिर में बैठे, ' राम ' नाम छाड़ी पूजन लागे पथरा।

मुसलमानो के प्रति–

कांकर पांथर जोड़ी के, मस्जिद लियो चुनाय ।

ता चढ़ी मूला बांग दे ,क्या बहरा हुआ खुदाय।।

जिस प्रकार तुम घर से बाहर हो, मां तुम्हारे पास नहीं है, पर मां की चेहरा को याद करो, तुम्हारे आंखों के सामने दर्पण की भांति उसकी चेहरा आ जाती है। ठीक उसी प्रकार एक जहां हम गए हैं उसी मनोरम दृश्य को याद करने पर, उसका दृश्य दर्पण की भांति अपने आंखों के सामने आ जाता है।

ठीक इसी प्रकार–जब हम भगवान राम के उस रुप को मंदिर में देखते हैं। उसे याद करने पर अयोध्या का मंदिर हमारे आंखों के सामने होता है।

ठीक उसी प्रकार हम कभी काबा (मक्का मदीना)को हज कआए हैं, लेकिन जब हम अपने घर में होते हैं तो उसी मस्जिद के सीन को देखने से घर बैठे ही वह दृश्य आ जाती है यही पूजा करने एवं नमाज पढने की सही कला है।

महाकवि कबीरदास का मानना हैं कि हमारे साई राम न मंदिर में रहते और नहि मस्जिद में , वे लोगों के घट– घट में वास करते हैं

जैसा उन्होंने कहा हैंः–'' जल में कुंभ हैं कुंभ में जल,

बाहर भीतर पानी।''

उपरोक्त कविते में जल का अर्थ हैं पानी, पानी से तात्पर्य परमात्मा सांई राम से हैं, जो सभी जीवों के घट –घट (हृदय)में प्राण के रूप में वास करते हैं। हमें तीरथ– वरत, मंदिर –मस्जिद जाने कि जरुरत नहीं,घर में ही एकाग्रचीत बैठकर ईश्वर साई राम का दर्शन करने से हो जाता हैं। वे हमारे अन्दर भी हैं और बाहर भी हैं, सर्वत्र

विराजमान हैं।

'' मन न रंगेला, रंगेला योगी कपड़ा। ''

उपरोक्त कविता हिन्दुओं के प्रति बोला गया हैं, यदि कोई सुन्दर नारी पूजा करते समय आपके बगल से गुजर रही है, उसको देखते हि आप उस पर मोहित हो जाते हैं, तो आपकी पूजा असफल हो जाती हैं।

''दाढ़ी बढ़ाई मुला बन गए बकरा। ''

उपरोक्त कविता मुसलमान के प्रति बोला गया है, दाढ़ी बढ़ाने और चूड़ीदार पजामा खलीता पहनने से और टोपी लगाने से असली मौलाना नहीं कहा जा सकता, उसके लिए उर्दू (अरबी फारसी)भाषा के साथ–साथ कुरान की भी अच्छी जानकारी होनी चाहिए, तभी असली मौलाना कहा जा सकता हैं।

––––– महाकवि कबीर दास ने कहा है।